EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 2, Issue 4, October-December, 2023, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

मधुकांत का उपन्यास 'गूगल बॉय' में रक्तदान महादान

डॉ॰ सुमन[1], रीना मलिक[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

[2]शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

रक्तदान से अभिप्रायः रक्त के दान से है। यह शब्द रक्तदान से मिलकर बना है। 'रक्त' का अर्थ 'रूधिर, खून' और 'दान' का अर्थ 'देने' से है। इस प्रकार रक्त दान से अभिप्राय रक्त देना या दान करना है। व्यक्ति समाज में रहता है वह अनेक वस्तुओं का आदान-प्रदान करता है जिससे उसका जीवन सुचारू रूप से चल सके। अकेला व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर पाता इसके लिए उसे अन्य की सहायता करनी व लेनी पड़ती है। यही लेन-देन 'रक्त दान' के माध्यम से भी होता है। यह पुण्य का कार्य भी होता है। जीवन में दान अनेक रूपों में किया जाता है। दान करने वाले व्यक्ति को श्रेष्ठ माना जाता है उसे दानी या महादानी के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसमें कोई स्वार्थ नहीं होता।

महात्मा बुद्ध ने भी कहा है- "बिना स्वार्थ की इच्छा के दूसरे की भलाई के लिए अपनी सम्पत्ति, अपना रक्त तथा शरीर का कोई अंग देना 'दान' कहलाता है।"[1]

इस तरह से दान किसी स्वार्थ वश नहीं किया जाता यह तो निस्वार्थ भाव से किया जाता है। विस्तृत रूप में किया गया दान 'महादान' कहलाता है। यह अनेक रूपों में किया जाता है जैसे सम्पत्ति दान, शरीर दान, रक्तदान तथा अन्य वस्तु दान आदि। जो वस्तु व्यक्ति को बहुत प्रिय होती है और उस वस्तु की अन्य व्यक्ति को भी आवश्यकता होता है तब वह दे दी जाती है या दान कर दी जाती है वही दान या महादान कहलाता है। जब व्यक्ति की नसों में गति प्रदान करने वाला रक्त ही दान कर दिया जाता है तो वह महादान ही कहा जा सकता है इसलिए रक्तदान को सभी दानों में श्रेष्ठ या महादान कहा जा सकता है क्योंकि इसमें मनुष्य किसी लालच से अपने शरीर का बहुमूल्य या अनमोल रक्त निकालकर रोगी के लिए समर्पित कर देता है जिसे वह जानता तक नहीं। रक्तदान करना व करवाना श्रेष्ठ दान माना जाता है। सभ्य संसार में धर्म व संस्थाए अनेक हो सकते है, विचारधाराएं अनेक हो सकती है जबकि खून का रंग सबमें एक ही होता है। जो व्यक्ति को जोड़े रखने का प्रयास करता है। रक्तदान सभी धर्मों, संस्थाओं व विचारधाराओं से श्रेष्ठ है। व्यक्ति धर्म के लिए लड़ते-झगड़ते रहते है जबकि रक्तदान करना ही व्यक्ति का धर्म होना चाहिए जो सभी धर्मो व विचारधाराओं में सर्वोपरी व महान सिद्ध होता है।

लेखक 'नवल डागा' ने रक्तदान के विषय में कहा है-

"रक्तदान से यदि बचे, इस धरती पर जान

उस दाता को कर्ण-सा, समझे आप महान।"[2]

अतः रक्तदान करने वाले को कर्ण समान माना है वही महादानी होता है जो आवश्यकता होने पर दान करता है। इसी दान, महादान का लेखक मधुकांत जी ने गूगल बॉय उपन्यास में वर्णन किया है। गूगल बॉय अपना रक्त ही दान नहीं करता बल्कि गाँव वालों को भी दान करने के लिए प्रेरित करता है। गांव के प्रत्येक व्यक्ति को चाहे युवा, वृद्ध, बालक, स्त्री-पुरुष क्यों न हो सबको रक्तदान करने के लिए अग्रसर करते है।

रक्तदान करने से शरीर कभी कमजोर नहीं होता बल्कि उससे शरीर चुस्त और ताजा हो जाता है जिस प्रकार से कुएँ से पानी निकालने से उसमें कभी पानी समाप्त नहीं होता उसी प्रकार से रक्तदान से शरीर का रक्त कम नहीं होता बल्कि उसके स्त्रोतों से ताजा और निर्मल पानी आता रहता है इसी प्रकार शरीर में भी बासी खून निकालते रहने से एक दिन में ताजा खून बनकर तैयार हो जाता है और रक्तदानी के शरीर में कोई कमजोरी भी नहीं आती बल्कि वह गाढ़े खून से होने वाली अनेक बीमारियों से बच जाता है। रक्तदान का जीवन में बहुत महत्त्व होता है इसके दान से अनेक व्यक्तियों को जीवनदान दिया जा सकता है। रक्त मिलने से जीवन रूपी ज्योति जलती रहती है। इसी कारण रक्तदान को महादान भी कहा जाता है जो मधुकांत ने अपने उपन्यास में वर्णित किया है। मधुकांत एक स्वैच्छिक रक्तदाता कहे जाता है उन्होंने जीवन में लोगों को प्रेरित किया है कि यदि किसी का जीवन बचाया जाए तो उसके घर, परिवार के लोगों से उनके लिए अनेक दुआएं ही निकलती है मधुकांत ने स्वयं भी अनेक बार रक्तदान किया है और लोगों को प्रेरित करने के लिए जगह-जगह पर समयानुसार अनेक कैंप लगाए व लगवाए है और अपने साहित्य के माध्यम से भी रकतदान की प्रेरणा लोगों को दे रहे है अभी तक उनके रक्तदान साहित्य की कई रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है जिनमें से 'गूगल' उपन्यास सम्पूर्ण रक्तदान पर ही लिखा गया है। पहली बार जो रक्तदान करता है उसे बहुत डर लगता है लेकिन उसके बाद उसे खुशी भी बहुत होती है जो इस उपन्यास में गूगल के माध्यम से दिखाया है -

"कैसा लगा गूगल तुम्हें पहली बार रक्तदान करके? .....

बहुत मजेदार। सचमुच मेरा तो मन हो रहा है, एक यूनिट खून और दान कर दूँ.....।"

अच्छा इतना उत्साह! तुम्हारा उत्साह देखकर तो मुझे लगता है कि एक दिन तुम रक्तदान के महानायक बनोगे।"[3]

अतः गूगल पहली बार रक्तदान करता है तो उसे बहुत खुशी होती है। कोई भी काम करते हैं तो पहले डर लगता है लेकिन जब उससे किसी की सहायता होती है तो मन को संतुष्टि होती है जो गूगल के माध्यम से व्यक्ति की यथार्थता दिखाई है। इसी उपन्यास में एक और संवाद से यह सब वर्णित होता है - "घर पहुँचा तो खुशी-खुशी मां को सब समाचार सुनाया। उसके उत्साह और उमंग को देखकर वह भी खुश हुई।

गूगल के मोबाईल में आज बधाइयों का ताँता लग गया। 'जय रक्तदाता' लिखकर वह सबका धन्यवाद करता रहा। किसी का फोन आता है तो वह 'हैलो' के स्थान पर 'जय रक्तदाता' कहकर संबोधित करता।"[4] इस तरह से गूगल द्वारा एक अच्छा काम करने पर अनेक शुभ नामों से सम्बोधित किया जाने लगा। शुभ काम करने में सभी उसकी सहायता करते है ईश्वर भी उससे प्रसन्न होते है जिससे गूगल को धन की प्राप्ति होती है और इसी धन से वह अनेक रक्तदान शिविर का आयोजन करता है और लोगों को प्रेरित करता है साथ ही वह लोगों को तोफा भी देता है उनके खाने-पीने का प्रबन्ध भी करता है।

इस संवाद से यह स्पष्ट होता है - "सुनो गूगल भाई, पिछले सप्ताह हमारी मासिक बैठक में यह विचार हुआ था, कि प्रथम बार कोई सामाजिक संस्था रक्तदान शिविर लगाती है और उसके पास रक्तदाताओं को उपहार देने का बजट न हो तो दानी सज्जनों से उनके लिये हेलमेट की व्यवस्था की जाये.....।[5] अतः रक्तदान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए लेखक ने गूगल के माध्यम से प्रेरित किया है यदि कोई रक्तदान नहीं करता जो उसे लेखक सजग करते है और रक्तदानी को पुरस्कार देकर सम्मानित करते है जिससे अन्य लोग प्रेरित होते है रक्तदान शिविर का आयोजन भी ऐसे स्थान पर करते है जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़ सके।

व्यक्ति जाति भेद कर देता है लेकिन खून का भेद किसी रंग में भेद नहीं करता वह तो सभी में समान होता है। इससे सभी में समानता प्रकट होती है यह सब लेखक ने गूगल बॉय उपन्यास में वर्णन किया है।

वे कहते हैं कि महिलाएं पुरुषों से किसी काम में पीछे नहीं है तो फिर रक्तदान में वह पीछे कैसे रह सकती है। उन्हें भी आगे बढ़कर इसमें सहयोग करना होगा यह 'गूगल बॉय' उपन्यास में अरूणा के माध्यम से दिखाया है - "महिलाओं के रक्तदान का काम अरूणा ने संभाल रखा था। तीन दिन से निरन्तर वह अपनी मां के साथ मन्दिर में आकर भजन मंडली की औरतों को रक्तदान के विषय में समझा रही थी..... महिलाओं ने आश्वासन दिया था कि वे अपने बेटे-बहू दोनों को लेकर आएँगी।"[6]

इस तरह से अरुणा महिलाओं को रक्तदान करने के लिए प्रोत्सान करती है। यहां तक कि वह मन्दिर में आरती भी रक्तदान पर ही करवाती है ताकि महिलाओं की रूचि रक्तदान के प्रति हो जाए -

"ओम जय श्री रक्तदाता, प्रभु जयश्री रक्तदाता

पीड़ित जनों के संकट, क्षण में हर जाता

रक्त जो मुझमें बहता, सारा है तेरा.....

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा.....

तुम बिन और न सूझे, जब है रक्त चाहता.....

तुम दान मिले तो जीवन बच जाता

x x x x x

x x x x x

अब ना कोई प्राणी, रक्त बिन प्राण तजे

ओम जय श्री रक्तदाता, प्रभु जय श्री रक्तदाता।"[7]

अतः रक्तदान से सेवाभाव, जीवन जोश व महादानी बना रहता है व्यक्ति में प्रेरणाशक्ति का विकास होता है यही प्रेरणा शक्ति लेखक पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं में भी करना चाहते है वे चाहते है कि जब महिला किसी काम में पीछे नहीं रहती तो रक्तदान में पीछे क्यों रहे इसलिए वे अपने साहित्य से यह जागरूकता और अधिक बढ़ाना चाहते है इसी उपन्यास में अरुणा के दृढ़ निश्चय से चित्रित होता है - "गूगल, आपको तो मालूम ही हैं, पिछली बार डॉक्टर ने मुझमें खून की कमी बताकर खून लेने से मना कर दिया था, लेकिन आज तो मैं दृढ़ निश्चय करके आयी हूँ कि डॉक्टरों से आग्रह करके भी रक्तदान करूँगी। मुझे तो पूर्ण विश्वास है, जो व्यक्ति ईश्वर के दरबार में लगने वाले शिविर में रक्तदान करेगा, प्रभु उसकी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।8 इस तरह अरुणा रक्तदान करने का दृढ़ निश्चय कर लेती है और अन्य महिलाओं को भी सेवा अभाव व रक्तदान करने के लिए आगे लाती है।

निष्कर्षतः मधुकांत ने रकतदान को महादान, जीवनदान कहा है इससे लोगों में सेवाभाव विकसित होती है जो अपने उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया है मधुकांत को रक्तदान के प्रेरणा स्रोत भी कहा जाता है इन्हीं की प्रेरणा से अनेक रक्तदान शिविर लगाए जाने लगे हैं। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इसके लिए जागरूक किया है जो रक्तदान करने के लिए ठीक है उन्हें रक्तदान कर समाज में अपना विशेष योगदान देना चाहिए क्योंकि समाज में रक्तदान करने से व्यक्ति भेद कम हो सकता है समाज की अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है एकता की भावना का विकास होता है इन सभी को आधार मान कर मधुकांत ने रक्तदान को अपने साहित्य व जीवन में विशेष स्थान दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. मधुकांत, महेन्द्र जैन, आशा खत्री लता, करो रक्त का दान, पृ0 7
2. नवल डागा, रक्तदान शतक, भाग-1, पृ0 22
3. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 23
4. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 64
5. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 78
6. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 93
7. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 92
8. मधुकांत, गूगल बॉय, पृ0 94